अंदर के इस द्वंद्व में ना जाने कौन हारेगा
कौन रहेगा जीवित कौन किसको मारेगा
मनोयुद्ध यह सदियों से है चलता आया
इसी ने हमको देवता या असुर है बनाया
इस युद्ध की कहानी द्वापर से आई चलती
हर जन्म यह कहानी अपनी चाल बदलती
कभी बनाती राजा हमें कभी ये रंक बनाती
कभी चढ़ाती अर्श पे कभी फर्श पे गिराती
बड़ा कमाल का है यह उठा पटक का खेल
बनता बिगड़ता रहता है कर्मों का पोता मेल
एक जन्म का पुण्य आगे हमको सुख देता
अगर पाप किए तो दुःख भी हमें बहुत देता
आने वाले हर विघ्न का कारण हमने जाना
बाबा से मिले ज्ञान नेत्रों से इनको पहचाना
हमने सब विघ्न बनाए अपने ही विकर्मों से
नाश करेंगे विघ्नों का हम अपने सुकर्मों से
युक्ति हमें मिल गई सम्पूर्ण पावन बनने की
जिम्मेदारी हम पर है दुनिया को बदलने की
दुनिया से विकारों को जड़ से हम मिटा देंगे

आने वाले विघ्नों को रस्ते से हम हटा देंगे
घर जाने से पहले धरा को स्वर्ग बना देंगे
बाबा के कार्य को हम पूरा करके दिखा देंगे
ॐ शांति